श्री दुर्गा

सप्तशती

प्रस्तावना

ॐ श्री दुर्गकाली देव्याः नमः ।

माँ भगवती की प्रेरणा मात्र तथा सदा बने हुए आशीर्वाद से ही प्रस्तुत ग्रन्थ के संकलन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ । प्रस्तुत ग्रन्थ दुर्गा सप्तशती की एक एक प्राचीन पाण्डुलिप्पी से संकलित किया गया है। इस ग्रन्थ से जुडी मेरी भावनायों को में व्यक्त करने में मैं असमर्थ हूँ, किन्तु संक्षेप में यह है की मेरे जीवन के बाल्य काल में मैं अपने दादाजी (बाई जी) को इस ग्रन्थ का अध्यन करते हुए देखता था। प्रत्येक नवरात्र में विधिवत पूजा की जाती थी। तब से ही भीतर यह इच्छा थी की उप्युक्य ग्रन्थ का संकलन किया जाये। गुरु जी की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से यह दुर्गम कार्य अति सुगम हुआ। मेरे माता, पिता, भगिनी एवम् मेरी भार्या अंकिता वत्स के भरपूर सहयोग से में इस ग्रन्थ को संकलन में सफल हो पाया। और मेरे पुत्र पार्थ शर्मा के स्नेहवशिभूत होकर मैंने इस ग्रन्थ को प्रकाशित

करने के प्रेरणा की। इस ग्रन्थ के संकलन में अनेक व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ। कुछ स्तोत्र जो अब किसी प्रकाशित पुस्तक में प्राप्त नहीं हैं **egangotri** से उपलब्ध हुए, इसके अतिरिक्त अनिमेष नागर (उज्जैन), चेतन पाण्डेय, श्रीवत्सा तथा अन्य मित्रों का सहयोग रहा।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रचलित सप्तशती से कुछ भेद है । प्रराम्भित पूजा में कुछ विशेष मंत्र हैं तथा उत्तरार्ध में रहस्यों के स्थान पर पंचस्तवी के स्तोत्र एवं इन्द्राक्षी स्तोत्र, ज्वालामुखी स्तोत्र एवं लघु सप्तशती है । इस ग्रन्थ में कुछ अन्य-स्तोत्र सम्मिलित किये गए हैं जो मूल पाण्डुलिप्पी में नहीं हैं ।

पुस्तक प्राप्त करने के लिये –

https://narindersharmasite.wordpress.com/2019/11/28/shri-durga-saptahati/
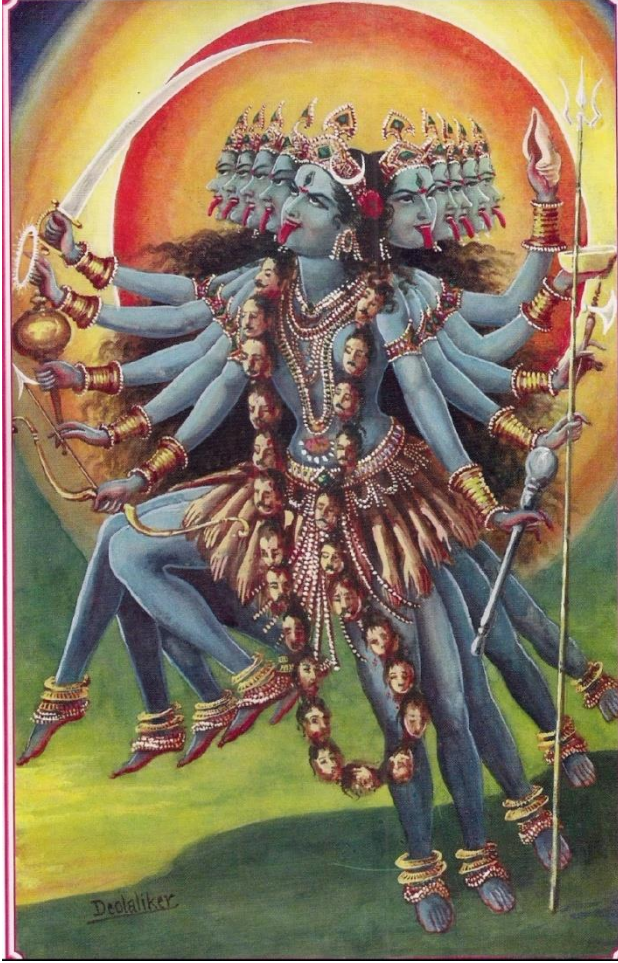
ॐ जयन्ति मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥
उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायिका।
चण्डा चण्डवती चैव चामुण्डा चण्डिका तथा।।

माया कुण्डलनी क्रिया मधुमयी काली कलामलिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती गौरी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वदिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरे परापरमयी माता कुमारीत्यसि ॥

पूज्य गुरुदेव रविकान्त तिवारी जी पूज्य श्री पंडित कर्मचंद जी **(**बाई जी**)**